E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2019; 1(2): 194-195
Received: 17-08-2019
Accepted: 20-09-2019

गुंजन कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गुंजन कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विकास में शिक्षकों की शिक्षण दक्षता की आवश्यकता

गुंजन कुमारी

सारांशः
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यक शर्त दक्षतापूर्ण शिक्षण कार्य है, शिक्षक की दक्षता का प्रभाव सम्पूर्ण समाज के निर्माण में निर्णायक होता है। राष्ट्र निर्माण में गुणात्मक उच्च शिक्षा अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन करती है। अतएव उच्च शिक्षा में शिक्षण दक्षता के द्वारा ही गुणवत्ता के मानकों को संगठित किया जा सकता है। अतः राष्ट्रहित के सन्दर्भ में शैक्षिक गुणात्मक उन्नयन हेतु उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण दक्षता की वर्तमान स्थिति का अवलोकन समीचीन प्रतीत होता है। शिक्षा अध्ययन विषय के साथ विकास की प्रक्रिया भी है। अध्ययन विषय तथा विकास की प्रक्रिया के क्षेत्र शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन क्रियाओं को समझना तथा कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त करना है परन्तु अभी भी शिक्षा शास्त्र के अन्तर्गत शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा दर्शन, शिक्षा का समाजशास्त्र, शिक्षा का इतिहास तथा शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है जिसका कक्षा शिक्षण में सीधा उपयोग नहीं है। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को शिक्षण तथा अनुदेशन का ज्ञान तथा बोध कराया जाये तथा अभ्यास का अवसर दिया जाए तभी प्रभावशाली शिक्षक तैयार किये जा सकते हैं। अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाय ताकि भावी शिक्षक शिक्षण कला में निपुण हो सके तभी जाकर वह विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास कर सकेंगे।

मुख्य–शब्दः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षकों की शिक्षण दक्षता, राष्ट्र निर्माण

प्रस्तावना
शिक्षा व शिक्षक की आवश्यकता और महत्व सर्वविदित है क्योंकि कोई भी शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती। शिक्षण यदि वृत्ति है तो उस व्यवसाय की उपयुक्त दक्षताओं एवं कौशलों को प्रशिक्षण के द्वारा ही अर्जित किया जा सकता है। इसलिए शिक्षण वृत्ति को सम–सामयिक एवं प्रभावशाली अर्थात् मूल्यपरक बनाये रखने के लिए सेवा पूर्व, सेवाकालीन और एक कदम बढ़कर यह भी कहा जा सकता है कि सेवा उपरान्त भी शिक्षक–प्रशिक्षण लेते रहना चाहिए। उपर्युक्त आवश्यकता परक कथन आज के युग में तो और भी खूबी के साथ लागू होता है, क्योंकि आज ज्ञान के आधार और तकनीकी में जो अति द्रुतगामी परिवर्तन हो रहे हैं, उनके साथ सामंजस्य बनाये रखना जरूरी होते हुए भी यह कठिनाई का विषय बन गया है।
शिक्षा एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। साथ–साथ इससे लगे हुए जितने अंग अथवा अवयव हैं वे सभी एक दूसरे से जुड़े हुए एवं एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसमें शिक्षक एक ऐसी कड़ी है जो हमेशा प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा एवं शिक्षण को प्रभावित करती है।
जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो शिक्षक की बात तत्काल आ जाती है। इस प्रकार से शिक्षक की भूमिका एवं उसमें आ रहे परिवर्तन और विकास में भी निरन्तर परिवर्तन आया है। साथ–साथ उसके सामाजिक स्तर की दृष्टि से भी महत्व परिवर्तन होता जा रहा है। आज जब तकनीक एवं वैज्ञानिक प्रविधियों का विस्फोट हो रहा है तो शिक्षक की भूमिका तथा उसमें सुधार का परिमार्जन करना आवश्यक है। यह विकास गुणात्मक अपेक्षित है क्योंकि समाज की गति अत्यन्त तेजी से परिवर्तित हो रही है। अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यकता होती है प्रशिक्षण की जो कि शिक्षा महाविद्यालयों में प्रदान किया जाता है।[1]
वर्तमान समय में शिक्षा में परिवर्तन हो रहे हैं या कहा जाए कि किए जा रहे हैं। जाहिर है कि हर क्षेत्र की तरह शिक्षा में परिवर्तन भी अवश्यंभावी है और आवश्यक भी। शिक्षा में परिवर्तन सही दिशा में होना इसलिए भी अपेक्षित है कि इसका प्रभाव मानवीय कार्यकलाप के हर क्षेत्र पर पड़ेगा। यदि शैक्षिक परिवर्तन में देरी होगी या इसमें कमियां होंगी तो विकास की प्रक्रिया हर अवयव में प्रभावित होगी। यह उचित ही है कि परिवर्तन के विभिन्न आयामों पर चर्चा हो रही है और भारत में शिक्षा जगत से जुड़े हुए लोग रूचि ले रहे हैं।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शैक्षिक परिवर्तनों पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो विगत वर्षों में बनी विभिन्न समितियाँ व शिक्षा आयोग की रिपोर्ट के आधार पर बनी शिक्षा नीति सबसे पहले सामने उभरती है।

आज भी अनेक शिक्षाविद् मानते हैं कि यदि ईमानदारी से कोठारी आयोग की रिपोर्ट पर क्रियान्वयन किया जाता तो आज शैक्षिक परिदृश्य पूरी तरह अलग होता। स्कूलों, कालेजों तथा अब विश्वविद्यालयों द्वारा जो वर्ग–भेद आर्थिक संपन्नता और विपन्नता के कारण पैदा हो रहा है वह इतना विषाक्त रूप नहीं लेता। कुल मिलाकर केन्द्र बिंदु शिक्षा की गुणवत्ता, उसमें व्यावसायिक कौशलों का समावेश, उद्योग जगत से शिक्षा से जुड़ाव आदि के आसपास ही निहित है। इन पर ध्यान न देकर अनेक समस्याओं को जन्म दिया गया है। यदि कोठारी आयोग की कॉमन स्कूल व्यवस्था, मातृभाषा में शिक्षा कार्य अनुभव और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार वाली संस्तुतियां को निष्ठापूर्वक क्रियान्वित की गई होती तो आज अन्य समिति व आयोग बनाने की आवश्यकता ही नही पड़ती।

भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। 20वीं शताब्दी के अन्तिम दो दशक विश्व के विकास में अपना विशेष स्थान रखते हैं। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज शिक्षक व्यवहार की प्रक्रिया को, उसकी रूचि, कार्यकुशलता, योग्यता आदि के साथ आबद्ध कर उसका वैज्ञानिक रूप में अध्ययन किया जाने लगा है। आज शिक्षक के व्यक्तित्व के समायोजन का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता है तथा समाज का एक अति महत्वपूर्ण उत्तरदायी नागरिक है। विद्यार्थियों को शिक्षक से बड़ी–बड़ी आशाएं होती हैं। विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं का समाधान उसे करना पड़ता है तथा विद्यार्थी के आचरण व क्रियाकलापों पर शिक्षक के मन मस्तिष्क की गहरी छाप पड़ती है। बालक के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है तथा इसी कारण समाज में सर्वाधिक सम्मान शिक्षक को दिया जाता है।

इन दिनों शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में जिस शब्द का काफी इस्तेमाल हो रहा है वह है "गुणवत्ता युक्त शिक्षा" परन्तु गुणवत्ता युक्त शिक्षा के लिए गुणवत्ता युक्त शिक्षकों का होना अनिवार्य है, परन्तु विगत एक दशक से शिक्षक प्रशिक्षण एवं शैक्षिक योजनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षकों में गुणवत्ता का स्तर दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है। यह कटु सत्य है इसमें शिक्षकों के प्रति आक्षेप, आरोप अथवा अपमान की भावना लेशमात्र भी नही है। गुणवत्ता की समस्या नए–पुराने, महिला–पुरूष तथा शहर–ग्रामीण शिक्षकों में कमोवेश समान रूप से विद्यमान है। ऐसा नही है कि योग्य शिक्षकों की नितांत कमी है पर समग्र रूप से तुलना करने पर इनका अनुपात बहुत कम है। गुणवत्ता स्तर पर कमी का एक दूसरा पहलू भी है। प्रायः सभी शिक्षकों में दक्ष शिक्षकों की बेहद कमी है जिनकी प्राथमिक स्तर पर विशेष आवश्यकता है। योग्य शिक्षकों में भी अधिकांश शिक्षक किसी एक विषय में ही पारंगत होते हैं। विषयगत योग्यताओं के अलावा अन्य क्रिया कलापों जैसे खेल–कूद, साहित्य, कला, संगीत आदि सृजनात्मक क्षेत्रों में भी रूचि रखने वाले शिक्षकों की काफी कमी है। प्रारंभिक शिक्षा में खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों में पायी जाने वाली चारित्रिक विकृतियाँ, धूम्रपान, मद्यपान, समाज विरोधी व्यवहार, यौन अपराध अधिक दोषी हैं।

"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तात्पर्य वैसी शिक्षा से है जो हर बच्चों के काम आये साथ ही उनकी क्षमतओं के सम्पूर्ण विकास में समान रूप से उपयोगी हो।" यानि ऐसी शिक्षा जो हर बच्चों की व्यक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान रखने वाली होगी। "शिक्षण कौशल, वह शिक्षक–शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा–शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाता है तथा कक्षा की अन्तः–प्रक्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है।"[2] गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में विद्यालय के योगदान को स्पष्ट करते हुए बालकृष्ण जोशी ने कहा कि "किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधानसभाओं, न्यायालयों और कारखानों में नही वरन् विद्यालयों में होता है।" विद्यालय की भूमिका निर्भर करता है छात्रों के लिए उपलब्ध कराये गये आदर्श स्थिति पर। जिनमें उनके मानसिक विकास एवं उपयोग हेतु सर्वोत्तम स्थिति उपलब्ध हो सके। मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी विद्यालय के दायित्वों को कम करके नहीं आँकना चाहिए। क्यूँकि स्कूली शिक्षावधि में छात्र–छात्रा उस वयःसन्धि से गुजर रहे होते हैं जहाँ उनके सामर्थ्य के संबंध में खुद मालूम नही होता है। ऐसे में एक कुशल एवं दक्ष शिक्षक छात्र के स्वरूप में उनके दायित्व का आमूल–चूल परिवर्तन कर सकता हैं।[3]

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास बिना दक्ष शिक्षक के संभव नहीं है। दक्ष शिक्षक ही शिक्षण कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं। वर्ग में विभिन्न तरह के छात्र रहते हैं। उन छात्रों को समझने की क्षमता अलग–अलग होती है। कुछ छात्र बहुत जल्दी समझ लेते हैं कुछ छात्र देरी से समझते हैं। दक्ष शिक्षक कुशलतापूर्वक सभी छात्रों में विषय वस्तु के प्रति रूचि उत्पन्न करते हैं तथा उनकी समझ को बढ़ाते हैं। शिक्षक पढ़ाने के विभिन्न तरीकों को शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में सीखते हैं।[4]अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विकास में शिक्षकों की शिक्षण दक्षता आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

ऐसे शिक्षक जिनके ऊपर भारत का अतीत निर्भर रहा है और आगे भी जिनके ऊपर भारत का भविष्य निर्भर है, जो भारत के भविष्य के कर्णधारों के निर्माता है, समाज को जिनसे बहुत सारी अपेक्षाएं हैं, ऐसे शिक्षकों की गरिमा, मान–सम्मान और आदर समाज में बना रहे इसके लिए समाज तथा सरकार को विद्यालयों में उन्हीं शिक्षकों का चयन करना होगा जो बहुत ही विद्वान, कर्मठ, उच्च शिक्षण अभियोग्यता, सृजनात्मकता, आत्मसंप्रत्यय तथा सकारात्मक अभिवृत्ति वाले हों।[4]

निष्कर्षः

शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का उपयोग विद्यालयों मेंयोग्य शिक्षकों की पूर्ती हेतु किया जाता है। शिक्षकों में शिक्षण कौशलों एवंक्षमताओं का विकास एक प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। इस रूप मेंअध्यापक शिक्षा एक प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है, इस सम्पूर्ण प्रक्रिया केपरिणामस्वरूप उत्पाद के रूप में एक कुशल एवं प्रभावी शिक्षक को तैयार करनेका प्रयास किया जाता है जो समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। इस दृष्टिसे यह माना जा सकता है कि शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं शिक्षक एक सिक्के के दोपहलू है जिसमें अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को एक प्रक्रिया के रूप में तथा शिक्षकको उसके उत्पाद के रूप में देखा जा सकता है।वर्तमान शिक्षकों की शिक्षण दक्षता कार्यक्रम में प्रशिक्षु छात्रों में जो भीदक्षता विकसित करने की बात की जाती है उसे वर्तमान विद्यालयी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था कोध्यान में रखकर किया जाता है। विभिन्न विद्यालयी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक द्वाराअपनी भूमिका का निर्वाह प्रभावी ढंगसे करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के उद्देश्य इस प्रकार के हों कि शिक्षक अपने कार्य प्रभावी ढंग से कर सके सफल शिक्षक वही है जो अपने दायित्वों काभली–भाँति निर्वाह करते हुए विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास कर सके और ऐसे शिक्षकोंको तैयार करने का उत्तरदायित्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का है।स्पष्ट है कि शिक्षा की गुणवत्ता सीधे तौर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, आर0 ए0, अध्यापक शिक्षा, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, 2016
2. पाण्डेय, के0पी0, अध्यापक शिक्षा, वाराणसी प्रकाशन, वाराणसी, 2017
3. शर्मा, प्रभा व नाटाणी, प्रकाश नारायण, शैक्षिक तकनीकी और कक्षा–कक्ष प्रबंधन, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर, 2006
4. सिंह, जे.डी. व अन्य, विद्यालय प्रबन्ध व शिक्षा की समस्याएं, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004